‘डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 6 4 जून, 2019 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

गनोड़ा (बांसवाड़ा) में उच्च प्रशिक्षण शिविर संपन्न

‘जागे हैं तो सोयें नहीं सदैव कृतज्ञ बने रहें’

हम सब कुछ पीछे छोड़कर परमेश्वर के मंगलमय विधान के तहत अपने जीवन को दिशा देने के लिए आए, 11 दिन पहले इस दिव्य अनुष्ठान का हिस्सा बने एवं अपने आपको बदलने के अभ्यास से गुजरकर आज विदा हो रहे हैं। इन 11 दिनों में आप जागे हैं तो अब सोना नहीं है। कितने ही प्रलोभन आएंगे, अंदर व बाहर के मित्र डिगाने को आएंगे लेकिन निर्णय स्वयं करें। क्या करूं और क्या न करूं इसमें ही समय न बिता दें। परमात्मा के उपासक बनने की जो बात समझ में आई है इसे प्रतिदिन स्मरण रखें। प्रतिदिन उसका स्मरण करें, इसे ढकोसला नहीं समझें, यह बहुत बड़ी ताकत देता है। भगवान के प्रति कृतज्ञ बनें कि उन्होंने हमें अपने आपको बदलने का ऐसा सुन्दर अवसर उपलब्ध करवाया। उसके प्रति सदैव कृतज्ञ रहें कि उसने हमें मानव जीवन दिया एवं स्वतंत्रता दी कि हम 84 लाख योनियों के बंधन से मुक्त हो सकते हैं। उन्हीं से प्रार्थना करें ताकि वे हमें अपने आपको बदल कर संसार को बदलने के मार्ग पर बढ़ने में सहयोग करें। हमे यहां जिसने भी जो बताया वह भगवान की ही वाणी है, बताने वालों के प्रति कृतज्ञ हों। व्यवस्थापकों के प्रति कृतज्ञ बनें। माता-पिता के प्रति उपकृत हों जिन्होंने यहां भेजा है। जिससे भी जो मिला उसके प्रति उपकृत हों क्यों कि उन सभी के उपकारों के परिणाम स्वरूप हम इस दिव्य जीवन यात्रा में प्रवृत्त हुए हैं। विरोधियों के प्रति भी कृतज्ञ बनें क्योंकि वे हमें सावधान रख निर्मल बनने में सहयोग करते हैं।

28 मई को उ.प्र.शि. गनोड़ा में विदाई संबोधन में माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम सब आज उदास है क्यों कि अब यहां से बाहर कोई सावधान करने वाला नहीं मिलेगा लेकिन अंततः तो हमें आत्मानुशासन पर आना होगा। अनुशासन का अर्थ होता है शासन का अनुसरण करना। अभी तो हमारे में मन, बुद्धि का शासन चल रहा है उसे शनैः शनैः आत्मा के शासन की ओर ले जाना है। यदि हमने अपने मन को नहीं बांधा तो अंदर का खोखलापन दूर नहीं होगा इसलिए पूज्य तनसिंह जी द्वारा अष्टसूत्रों का पालन कर यहां से जाने के बाद अभ्यास जारी रखें। उनके अष्ट सूत्रों के अनुसार प्रातःकाल सूर्यादय से पूर्व उठकर शौचादि से निवृत हो जावें। उसके बाद स्तवन (ईश स्मरण) करें। स्वाध्याय करें। स्वयं का अध्ययन करें एवं इसमें सहायक साहित्य का अध्ययन करें। प्रतिदिन श्रम अवश्य करें। अगला सूत्र सेवा है जिसका अर्थ किसी अन्य के लिए किया गया श्रम होता है। अपने पूरे दिन के क्रियाकलापों पर मनन कर डायरी लेखन करें। मौन शक्ति प्रदायक हैं एवं स्वयं को देखने में सहायक होता है इसलिए प्रतिदिन निश्चित अवधि में प्रयासपूर्वक मौन रहने का अभ्यास करें। सोने से पूर्व बिस्तर पर बैठकर अपने पूरे दिन के कार्यों को ईश्वर को समर्पण कर उसकी धारणा कर सोएं, यही समाधि का अभ्यास है। **(शेष पृष्ठ 3 पर)**

गजेन्द्रसिंह महरोली बने केबीनेट मंत्री

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक गजेन्द्रसिंह महरोली को भारत सरकार में 30 मई को केबीनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलवाई गई। श्री महरोली के पिता शंकरसिंह महरोली भी संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक हैं। गजेन्द्रसिंह को वर्तमान संघ प्रमुख माननीय भगवानसिंह रोलसाहबसर एवं पूर्व संघ प्रमुख श्रद्धेय नारायणसिंह रेड़ा के निकट सानिध्य में रहने का अवसर मिला है। गजेन्द्रसिंह के अलावा वरिष्ठ नेता राजनाथसिंह व नरेन्द्रसिंह तोमर भी केबीनेट मंत्री बने हैं। डॉ. जितेन्द्रसिंह व आर.के. सिंह को राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा अनुराग सिंह ठाकुर, रावसाहेब दानवे पाटिल व जनरल वी.के. सिंह को राज्यमंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई।

स्वागत भारत सरकार

30 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में प्रचण्ड बहुमत के साथ भाजपा नीत गठबंधन के सरकार ने भारत सरकार के रूप में शपथ ली है। इस प्रचंड बहुमत में वर्षों से उपेक्षित महसूस कर रही राष्ट्र की बहुसंख्यक चेतना ने अपना प्रकटीकरण किया है। अब बारी सरकार की है कि वह सम्पूर्ण भारत की सरकार के रूप में देश के प्रत्येक नागरिक की अपेक्षाएं पूरी करेगी। चुनाव प्रचार एवं परिणाम दोनों ही स्पष्ट करते हैं कि भारत के लोग अपनी पहचान एक राष्ट्र के रूप में करवाना पसंद करते हैं और इस राष्ट्रीय भावना के समक्ष विपक्ष द्वारा उठाए सभी नकारात्मक मुद्दे बेअसर रहे। विपक्ष की दयनीय हालत उनके लिए सीख है कि किसी भी प्रकार की नकारात्मकता कमी सृजन नहीं कर सकती। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

प्रभात संदेश

माननीय संघ प्रमुख श्री ने शिविर में प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रार्थना के समय शिविरार्थियों को प्रभात संदेश दिया। उन प्रभात संदेशों का संक्षिप्तकरण कर पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

19 मई को प्रभात संदेश में बोलते हुए माननीय संघ प्रमुख ने कहा कि कल आपको योग के कुछ सूत्र बताए गए उनका आचरण ही पुरुषार्थ है। इस पुरुषार्थ में अनेक अवरोध आएंगे। रुकावटें आएगी। आज हम उन अड़चनों की चर्चा करेंगे। ये अड़चने शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक तीनों प्रकार की हो सकती हैं। हमारे शास्त्रों में मनीषीयों ने 6 प्रकार के अवरोध बताए हैं। हर व्यक्ति के छह दुश्मन होते हैं उनसे सदैव सावधान रहना आवश्यक है। पहला अवरोध काम होता है। काम का अर्थ है कामनाएं। हमने कल ईश्वर प्राणिधान की बात की। वही उसका उपाय है। हम सूत्र है वह सूत्रधार है। अपनी कामनाओं को उसको सौंपने का प्रयास करें। दूसरा अवरोध है क्रोध जो कामनाओं में विघ्न आने पर पैदा होता है। क्रोध पतन की ओर ले जाता है। तीसरा अवरोध मद अहं बुद्धि की उपज है। इससे घमंड और अहंकार पनपता है। चौथा अवरोध मोह है। देखी-सुनी, स्थान, वस्तु या मनुष्य में आसक्ति ही मोह पैदा करता है। अगला अवरोध लोभ है जो अपरिग्रह का विलोम है। अंतिम शत्रु मत्सर है। दूसरों को कितना मिला इसको देखना ही ईर्ष्या पैदा करता है। ये शत्रु ही साधना के सबसे बड़े बाधक है। गीता के अनुसार शत्रु हमारे अंदर है। जब हम हमारी आत्मा की आवाज को नहीं सुनते तब हम ही हमारे शत्रु बन जाते हैं। संघ हमें बाहर भीतर के शत्रु से परिचित करवाता है। हम अपने आपको संघ को सौंपें, संघ हमें संघर्ष से पार ले जाएगा।

20 मई को प्रभात संदेश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि श्रीमद्‌भगवद्‌गीता युद्ध के लिए तैयार दो सेनाओं के बीच भगवान श्रीकृष्ण द्वारा काव्य रुप में अर्जुन से किया गया संवाद है जिसे विस्तृत रुप देकर भगवान व्यास ने महाभारत का एक अध्याय बनाया। इसे जीव और ब्रह्म का संवाद माना जाता है जिसमें जीव के संशयों, प्रश्नों एवं समस्याओं का ब्रह्म द्वारा निवारण है। यह संसार के लिए संदेश है कि युद्ध बाहर नहीं भीतर चल रहा है। अर्जुन संसार का प्रतिनिधि बनकर संशयों का निवारण करने की प्रार्थना करता है। अर्जुन का एक प्रश्न है हवा की गति से चलने वाले मन को कैसे रोका जाए? यह हम सबका प्रश्न है। मन का स्वभाव चंचलता है। वह स्थिर नहीं रह सकता। उसे स्थिर करना ही साधना है। हमारा शरीर, इंद्रियां, मन, बुद्धि सभी चलायमान हैं। स्थिर नहीं रह पाते। भगवान ने मन को स्थिर करने का उपाय बताया अभ्यास और वैराग्य। वैराग्य का अर्थ होता है राग विहीन होना। देखी, सुनी व उपयोग की गई वस्तु से हमारा राग हो जाता है, मोह हो जाता है उनमें विराग होना ही वैराग्य है।

मन के चंचल स्वभाव को बदलना ही संस्कारों का निर्माण करना है। चंचलता को रोककर स्थिर कर देना ही योग की भाषा में आसन है। मन को स्थिर करने के लिए उसे पहचान कर पकड़ना आवश्यक है। पहचान में आते ही मन स्थिर होने को तैयार हो जाता है। संघ इसी पहचान को जागृत करता है ताकि मन को पकड़ा जा सके। मन सभी इन्द्रियों का राजा है। यदि इसे पकड़ लें तो इन्द्रियां स्वतः संयमित हो जाती हैं। इन तीनों दिनों में हम उधर ही बढ़े हैं। यह गति बनी रहे यही आज के प्रभात का मंगल संदेश है।

21 मई को प्रभात संदेश देते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि संघ एक विशाल दृष्टिकोण को लेकर चल रहा है। संघ स्वच्छ एवं स्वस्थ बनना है। यह सब प्रबल शासक से संभव है। पूरा संसार एक शरीर है जो मेरे ही द्वारा संचालित, पालित और नियंत्रित हो रहा है, ऐसा विशाल दृष्टिकोण क्षत्रिय का होना चाहिए। जो किसी को कष्ट देता है, उसे दंड देने के लिए बल आवश्यक है। ऐसे में हिंसा गलत नहीं है। हिंसा को रोकने में क्षत्रिय का हिंसा न करना उसे पाप का भागीदार बनाता है। इसलिए ऐसे प्रबल शासक की आवश्यकता है और इसीलिए आवश्यक है कि हम शासन हमारे हाथ में लें। संघ की यात्रा उधर की है। लेकिन अभी प्रारंभिक अवस्था में हैं। संसार की मांग है कि हम संसार के करुण क्रंदन को सुनें एवं दूर करें लेकिन शक्ति शौर्य के अभाव में ऐसा संभव नहीं है। शक्ति और शौर्य से पहले अपने आपको जीता जाता है और फिर शेष संसार को। संसार को जीतने का अर्थ शासित करना नहीं बल्कि दिलों को जीतना है, मन को जीतना है। संघ इसी विशाल दृष्टिकोण को लेकर चल रहा है। कुछ लोग संघ को संकुचित कहते हैं लेकिन संघ इससे प्रभावित नहीं होता बल्कि अपनी यात्रा जारी रखता है। हर बीज वट वृक्ष बनने से पहले छोटा ही होता है लोकिन वह वृक्ष बनता है तो सारा संसार उसकी छाया में सुखी होता है। संघ उसी की प्रक्रिया है, हम अभी इसके प्रारंभिक दौर में हैं।

22 मई को अपने प्रभात संदेश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि आप अपने जीवन में यहां जो परिवर्तन देख रहे हैं उसे निरन्तर कर संसार को अपने जीवन के माध्यम से संदेश देना है। आपकी आयु, विद्याध्ययन आदि इसमें बाधक नहीं होती क्यों कि भगवान ने सभी को क्षमताएं दी हैं। योगियों ने उस शक्ति को कुण्डलिनी शक्ति कहा है जो जागृत होने पर अनेक कष्ट प्रदान करती है लेकिन उसके विभिन्न चक्रों को पार करने पर वह परम आनंददायक होती है। संघ हमारी उस ऊर्जा को ही जागृत कर रहा है, हम अनजाने में उधर ही बढ़ रहे हैं। हमें लापरवाही छोड़कर जागृत रहना है, हम इस तरह बढ़ कर संसार को अपने आलिंगन में लेने की क्षमता अर्जित कर पाएंगे। परमेश्वर को प्रार्थना करें कि वह हमारी इस शक्ति को जागृत कर स्वयं तक पहुंचाए, यही आज का प्रभात की मंगल कामना है।

23 मई के प्रभात संदेश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के चौथे अध्याय में कहा कि मैंने यह योग सृष्टि के आदि में सूर्य से, सूर्य ने मनु से कहा। मनु से इक्ष्वाकु ने सुना और फिर राजर्षियों तक आकर यह ज्ञान लुप्त हो गया। लुप्त हुआ, नष्ट नहीं हुआ। वही ज्ञान 5200 वर्षों पूर्व भगवान कृष्ण ने कहा। इस युग में विभिन्न महापुरुषों ने उसी ज्ञान को पुनः प्रसारित किया। पूज्य तनसिंह जी ने वही ज्ञान श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से दिया। संघ निष्काम कर्म योग की साधना है। फलासक्ति रहित कर्म की साधना है। फलासक्ति रहित होने का अर्थ है कि यही फल होना चाहिए इस बात की आसक्ति के बिना कर्म करना। कर्म का फल निश्चित है लेकिन ईच्छित फल की आसक्ति या कामना से कर्म करने पर निराशा आती है। क्रोध आता है। कामना न रहे तो भी फल तो मिलेगा ही लेकिन निष्काम होकर करेंगे तो उसका तप हमें मिलेगा। त्याग का फल भोग के फल से अधिक होता है। जैसे कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया में आने वाली सिद्धियों का उपयोग करने से प्रक्रिया बाधित होगी उसी प्रकार निष्काम कर्म की प्रक्रिया में मिलने वाले फल का भोग विकृतियां पैदा करता है। कर्म का फल भोगने से नष्ट होता है एवं त्यागने से गुणित होता है। हम उधर बढ़ें यह आज की मंगल कामना है।

24 मई के प्रभात संदेश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि योग में यम, नियम, आसन, प्राणायम के बाद प्रत्याहार होता है। जो हम ग्रहण करते हैं उसमें परिवर्तन होता है। प्राणायाम के तहत हम यहां ग्रहण करते हैं, उसका मनन करते हैं और फिर उसका प्रसारण करते हैं। मनन के परिणाम में हमारी जीवन शैली में परिवर्तन आता है और वह परिवर्तन ही प्रसारित होता है। यदि यह नहीं होता है तो साधना ढकोसला बनकर रह जाएगी। संघ में पद होते हैं लेकिन कोई पदाधिकारी नहीं होता। संघ अधिकार की नहीं कर्तव्य की बात करता है इसीलिए लोगों के आकर्षण का विषय नहीं बन पाता। यहां दायित्व होते हैं, घटनायक, शिक्षक, शिविर प्रमुख, संघ प्रमुख सभी के दायित्व हैं। इसीलिए यहां पदाधिकारी नहीं बल्कि सहयोगी होते हैं। संघ प्रमुख भी हमारा सर्वमान्य सहयोगी ही है। स्वयंसेवक से संघप्रमुख सभी परस्पर सहयोग द्वारा अपने आचरण में परिवर्तन लाते हैं, यह परिवर्तन ही प्रत्याहार है। जो हमने जाना है वह हमारे जीवन में आए यही प्रत्याहार है। इसलिए परमेश्वर से प्रार्थना करें कि जो श्रेष्ठ जाना है वह हमारे जीवन में आए और आने के बाद जाए नहीं। अच्छाई हैं वे जाएं नहीं और बुराई कोई रहे नहीं। शिविर में सदैव कर्मशील रहें, विश्राम के समय के अलावा विश्राम नहीं करें। अनर्गल बातें करने से अनर्गल जीवन बनता है इसलिए कम से कम बोलें। संघ ज्ञान, भक्ति और कर्म की त्रिवेणी है। संघ व्यष्टि, समाष्टि और परमेष्टि की त्रिवेणी है। हमें इसमें रहते हुए हमारे आचरण द्वारा संसार को संदेश देना है यही आज के प्रभात का मंगल संदेश है।

25 मई के प्रभात संदेश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए जिज्ञासा होनी आवश्यक है। लेकिन गीता जिज्ञासा के बाद तीन शर्तें और लगाती है। उन तीनों के बिना ज्ञान फलीभूत नहीं होता है। वे हैं श्रद्धा, तत्परता एवं संयम। यदि जिज्ञासा है लेकिन जिससे जानना है उसके प्रति श्रद्धा नहीं है तो ज्ञान घटित नहीं होता। परिष्कृत बुद्धि ही श्रद्धा कहलाती है। जिज्ञासा भी है, श्रद्धा भी है लेकिन हम उसके लिए उद्यमशील नहीं हैं, कर्मशील नहीं हैं तो भी ज्ञान संभव नहीं है। अब श्रद्धा भी है, आप उद्यमशील भी हैं लेकिन इंद्रिया विभिन्न दिशाओं में दौड़ रही हैं तो भी ज्ञान घटित नहीं होता। संघ में हमने जो देखा है, सुना है वह बाहर से सुना व देखा है। हमें यदि उसे स्थायित्व प्रदान करवाना है, प्रकाश की जो किरण नजर आई है उससे अंतर की गली-गली को प्रकाशित करना है तो इन सबका होना आवश्यक है। इसलिए मेरे उठने से ही समाज उठेगा, राष्ट्र उठेगा, संसार उटेगा इस संकल्प के साथ संघ को अपने भीतर कर्म करने दें यही आज के प्रभात का मंगल संदेश है।

26 मई को प्रातःकाल में माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने गीता को संघ का आधार माना है। संघ गीता में वर्णित मार्ग के अनुसार चार बिन्दुओं पर विशेष जोर देता है। पहला है आचार जिसका अर्थ है आचरण। संघ व्यवहारिक अभ्यास के द्वारा हमारे आचरण को उद्देश्य के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। दूसरा बिन्दु विचार है। आचरण वैसा ही होगा जैसा हमारा विचार होगा। हमारे विचार कैसे हों इसके लिए गीता के आलोक में संघ हमारा निरन्तर मार्गदर्शन कर रहा है। तीसरा बिन्दु आहार है। आहार का अर्थ ग्रहण करना होता है। वही आहार लेना है जो शुद्ध हो, सात्विक हो, स्वादिष्ट हो और स्वास्थ्यवर्धक हो। जो स्वादिष्ट है लेकिन सात्विक नहीं है तो ऐसा आहार नहीं लेना है। साधना करते-करते हमारा आहार प्रत्याहार नहीं बनता तो जड़ता आती है और साधना अवरुद्ध हो जाती है। आज दुर्भाग्य से तामसिक आहार को ही शिष्टाचार मान लिया है और ऐसा करने वाले अपना ही नहीं बल्कि उन्हें देखने वालों, अनुकरण करने वालों का भी कबाड़ा करते हैं। चौथा बिन्दु विहार है। हम कहां रहते है, किसके साथ रहते हैं, कहां जाते हैं यह भी साधना को बहुत प्रभावित करता है। पुराने समय में लोग हमें देखकर आचरण किया करते थे, हमारा आचार, विचार, आहार, विहार बिगड़ा तो समस्त संसार का बदल गया। शिविर में हम इन चारों बिन्दुओं के व्यवहारिक स्वरूप का अभ्यास करते हैं।

27 मई को प्रभात संदेश में उन्होंने कहा कि गीता के अनुसार संसार में दो प्रकार की वृतियां है। राक्षसी वृत्ति और दैवीय वृत्ति। मनुष्य अपने तीनों गुणों (सत, रज, तम) के अधीन इनमें से एक की तरफ झुकता है। दिन में कई बार हम राक्षस बनते हैं या देवता बनते हैं। यहां का प्रशिक्षण हमारे रजोगुण को सतोगुण की ओर मोड़कर देवत्व की ओर बढ़ाता है। लेकिन चंचल मन हमें पुनः पुनः तमोगुण की ओर आकृष्ट करता है। हवा की गति से चलने वाले इस मन को अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा नियंत्रित करने का व्यवहारिक प्रशिक्षण हम यहां ले रहे है। इसके लिए परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है इसलिए प्रतिदिन उनसे प्रार्थना करनी चाहिए, उनके किसी नाम का जप करना चाहिए। हमारे अंतर में चल रहे संघर्ष को निरन्तर देखते रहें एवं निरन्तर इस संघर्ष में प्रवृत्त रहें।

28 मई को माननीय संघ प्रमुख श्री ने प्रभात संदेश में कहा कि हम निरन्तर शिविर की विदाई की ओर बढ़ रहे हैं एवं उसकी तैयारी कर रहे हैं क्यों विदाई निश्चित है। उसी प्रकार मृत्यु भी निश्चित है। जो आया है उसे जाना ही होगा लेकिन हम मृत्यु के लिए तैयार नहीं होते, उसके लिए तैयारी नहीं करते है। हम निरन्तर मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे हैं ऐसे में आवश्यक है कि हमें जो मिला है उसका त्यागपूर्वक भोग करते हुए आगे बढ़ें। संघ कहता है कि हमारी सुविधा, कौशल, प्रतिभा आदि सब भगवान की दी हुई है और उसे ज्यों ही हम अपनी मानते हैं हमारी यात्रा भार वाली हो जाती है और यही भार हमारे दुःख का कारण है। यात्रा में हल्के होने के लिए इन सबको परमेश्वर की मानकर उसकी सेवा में लगाएं, यही मृत्यु की तैयारी है।

'जागे हैं तो सोयें नहीं, सदैव कृतज्ञ बने रहें'

(पृष्ठ एक से लगातार)

इस प्रकार इन अष्ट सूत्रों का पालन हमें निरंतर अभ्यास द्वारा मन को बांधने में सहायक होगा, अन्यथा भटक जाएंगे। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि जाकर धूम मचाओं इसका अर्थ है कि हम लोगों के सामने स्वयं का उदाहरण पेश कर उन्हें इस मार्ग की ओर आकर्षित करें। यहां से जो अच्छा पाया उसे पोटली बांधकर लेकर जाएं एवं जो भी बुरा है उसे यही छोड़कर जाएं। ऐसा करने पर यह स्थान हमारे लिए सदा के लिए तीर्थ स्थल बन जाएगा। सोते, जागते, रात को, दिन को जो संकल्प आपमें जगे हैं उन्हें अपने आपको तेल बनाकर जागृत रखें। अपने सभी लेन-देन समाज सापेक्ष बनाने की सीख के साथ संघ आपको अगली बार स्वागत करने के लिए विदाई दे रहा है। 18 मई 2019 को बांसवाड़ा जिले के गनोड़ा स्थित 'लिटिल एंजेल्स' विद्यालय भवन में प्रारम्भ हुए शिविर में राजस्थान व गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों के अलावा उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश एवं बिहार के समाज बंधु भी शामिल हुए। शिविर प्रमुख का दायित्व माननीय संघ प्रमुख श्री के मार्गदर्शन में संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने निभाया। शिविर के प्रारम्भ में 18 मई को शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर स्वागत करते हुए शिविर का शुभारंभ किया गया। स्वागत उद्बोधन में माननीय संघ प्रमुखश्री ने कहा कि हम आज से यहां एक 11 दिवसीय अनुष्ठान प्रारम्भ कर रहे हैं दिव्य उद्देश्य के लिए। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग सम्पूर्ण योग मार्ग है। योग का अर्थ होता है मिलना। बिछुड़े हुए का मिलन। आत्मा का परमात्मा से, जीव का ब्रह्म से मिलन। ये संसार को बनाने के लिए बिछुड़ते हैं और संसार में आकर मिलने को पुनः प्रवृत होते हैं। संघ का मार्ग मिलने का मार्ग है, योग का मार्ग है। यह बाहर की कम एवं भीतर की अधिक साधना है। संघ में हमारे शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा की साधना करते हैं। इसीलिए इसे सम्पूर्ण योग मार्ग कहा है। संघ की कार्य प्रणाली को सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली कहा जाता है। वैसे योग के लिए समूह की आवश्यकता नहीं है लेकिन संघ सामाजिक साधना का मार्ग है। संसार से भागकर नहीं संसार में रहकर योग की बात करता है। व्यष्टि, समष्टि एवं परमेष्टि तीनों आयामों की बात करता है। संघ संसार में परिवार, गांव, समाज आदि के साथ रहकर साधना का मार्ग है। इसलिए सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली को अपनाया है। हम यहां 11 दिन संघ की प्रणाली से दिव्य उद्देश्य के लिए सरल तरीकों से साधना करेंगे। छोटे-छोटे सूत्रों की सहायता से आगे बढ़ेंगे। शिविर के प्रारम्भ में आज स्वागत के समय आपको 10 सूत्र बताए जा रहे हैं। इनमें से 5 नहीं करने योग्य हैं और 5 करने योग्य हैं। इन्हें ही यम और नियम कहा गया है। नहीं करने योग्य में पहला है झूठ नहीं बोलना। शिविर में जागृत रहे कि किसी भी प्रकार का असत्य आचरण नहीं करें। झूठ नहीं बोलें।

अल्पाहार

जयकारा

विनोद सभा

सम्पदः

दूसरा नहीं करने योग्य काम है किसी को कष्ट नहीं देना। हर कार्यक्रम में उठते, बैठते, सोते, भोजन करते यह ध्यान रखें कि आपके कारण किसी को कष्ट न पहुंचे। इतने जागृत रहें कि हमारी प्रसन्नता या उदासी भी किसी के लिए कष्टदायक न हो। तीसरी न करने योग्य बात है किसी वस्तु के प्रति आसक्ति न रखें। जो भी है परमेश्वर का है उसे त्यागपूर्वक भोग करें। चौथी बात न करने योग्य है कि आंख, कान, नाक, जीभ आदि इंद्रियों को असंयमित न होने दें। जैसे रखा जा रहा है उसमें ही संतुष्ट रहें। संयमी रहे। पांचवी बात न करने योग्य है कि किसी भी वस्तु का संग्रह न करें। जितनी अवश्यकता है उतना ही लें।

शिविर की कार्य प्रणाली में इन पांचों का स्वाभाविक अभ्यास करवाया जाएगा। आपको जागृत रहकर अभ्यास करना है। पांच करने योग्य सूत्रों में पहला है शुद्धि। अपने स्थान, कपड़े, भोजन, शरीर की शुद्धि रखें। बाहर की पवित्रता से भीतर की पवित्रता की ओर बढ़ें। हर गंदगी के आवरण को हटाना है। दूसरा करने योग्य सूत्र है तप। तप का अर्थ होता है अपने उद्देश्य की प्राप्ति में आने वाले सभी कष्टों को सहना। अभावों को सहना। इन 10 दिनों में शारीरिक, मानसिक आदि अभावों को सहन करने का अभ्यास करना है। तीसरा करने योग्य सूत्र है जो मिले उससे संतुष्ट रहना। संतोष का अभ्यास करना। चौथा सूत्र अपने आपका अध्ययन करना है। स्वाध्याय का अर्थ होता है स्वयं को अध्याय मान कर उसका अध्ययन। अपने आपका आकलन करना। स्वयं की समीक्षा करना। अंतरावलोकन करें। अपनी भूलों को जानें और उनका दोहरान न करें। अच्छाइयों को मजबूत बनाएं, न छोड़े। आप पर दायित्व है तो ही दूसरों को टोकें अन्यथा कोई गलत कर रहा है तो भी न टोकें, स्वयं को देखें। पांचवा करणीय सूत्र है ईश्वर प्राणिधान। इसका अर्थ है जो कर रहा है परमेश्वर कर रहा है। हमको लगता है कि मैं कर रहा हूं, यही अहंबुद्धि है जो कबाड़ा करती है। आवश्यकता है कि सब कुछ ईश्वर पर छोड़ें. ईश्वर ही कर रहा है, उसे समर्पित करें। ईश्वर की साधना ईश्वर की सहायता के बिना संभव नहीं है। पूरे शिविर में इन छोटे-छोटे सूत्रों का अभ्यास करना है। ये ही हमारी योग की प्रक्रिया प्रारम्भ करवाएंगे। महापुरुष इसी रास्ते पर चले। इसी के बल पर हम शोषित लोगों का उद्धार कर पाएंगे। आपको पूरा संसार देख रहा है इसलिए सावधान रहें कि आप किसी के पतन का कारण न बनें। संघ व्यक्ति नहीं है। आपका स्वागत कोई व्यक्ति नहीं कर रहा है। बल्कि संघ कर रहा है। व्यक्ति बदलते रहते हैं। इसलिए संघ को समर्पित होकर ईश्वर को समर्पित होने की साधना में प्रवृत्त हों। हमारा अहोभाग्य है कि परमेश्वर ने कृपा पूर्वक हमें यहां भेजा है। संघ इस दिव्य अनुष्ठान में आपके हृदय की निर्मलता का स्वागत करता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संपादकीय Column

क्रिया प्रतिक्रिया और संगठन

शक्ति सदा से ही संसार का आकर्षण रही है। हर व्यक्ति समाज व राष्ट्र शक्तिशाली बनना चाहता है। मनुष्य जीवनभर शक्तिशाली बनने का प्रयत्न करता रहता है। संगठन शक्ति का एक बड़ा साधन है। आदि काल से ही लोग संगठित होकर शक्तिशाली बनते रहे हैं। जब भी किसी बड़े उद्देश्य को हासिल करना मनुष्य की व्यक्तिगत शक्ति के बूते के बाहर हुआ तब तब उसने संगठित होकर प्रयास प्रारम्भ किए। यहां तक की सर्व शक्तिमान परमेश्वर भी जब जब संसार में आए तो उन्होंने मनुष्य की शक्ति को संगठित कर अपने अवतरण के लक्ष्य को हासिल किया। इस प्रकार जैसे शक्ति सदा से ही आकर्षण की केन्द्र रही वैसे ही संगठन भी सदा से ही शक्ति अर्जन हेतु आकर्षण का केन्द्र रहा है। लेकिन इन सबके बीच विचारणीय प्रश्न यह है कि उस संगठन का प्रेरक क्या है? उस संगठन निर्माण के पीछे कोई क्रिया काम कर रही है या प्रतिक्रिया? प्रायः अधिकतम संगठन प्रतिक्रिया स्वरूप बनते हैं। किसी क्रिया की प्रतिक्रिया में, जवाब देने के लिए संगठन बनाए जाते हैं। ऐसे संगठनों के बनने की गति बहुत अधिक तीव्र होती है। ये बहुत जल्दी फैलते हैं और विस्तार को प्राप्त होते हैं। प्रतिक्रिया जितनी अधिक तीव्र होगी, संगठन के निर्माण की गति भी उतनी ही तीव्र होगी। ज्यों-ज्यों प्रतिक्रिया की तीव्रता कम होती जाएगी संगठन की प्रखरता भी उतनी ही कम होती जाएगी। ऐसे संगठन रजोगुण प्रधान तो होते है। क्रियाशीलता भी अधिक होती है लेकिन सतोगुणी प्रेरणा न होने पर उनका पराभाव भी उतनी ही तीव्र गति से होता है जिस गति से उनका उभार हुआ था। उदाहरणार्थ समकालीन इतिहास में मार्क्सवाद बड़ी तीव्र गति से फैला। रूस में सदियों से चल रही जारशाही लालक्रांति की भेंट चढ़ गई। एक बार तो ऐसा लगने लगा कि संपूर्ण संसार लाल झंडे के तले आ जाएगा लेकिन कालांतर में यह क्रांति उतनी ही गति से पराभाव को प्राप्त हुई और आज केवल अवशेष रूप से कुछ देशों में शासन व्यवस्था के रूप में विद्यमान रही है और उसका भी चरित्र पूंजीवादी है। प्रतिक्रिया जितनी तीव्र थी उतनी ही गति से वह परवान चढ़ी लेकिन कालांतर में प्रतिक्रिया क्षीण होते ही उसका पराभाव हो गया। इस प्रकार शोषण या दमन का बदला लेने के भाव से बने सभी संगठन इसी नियति को प्राप्त होते हैं या भविष्य में प्राप्त होंगे। आज विश्व की बड़ी समस्या बनकर उभरे आतंकवादी संगठन भी ऐसे ही प्रतिक्रिया वादी सोच के कारण पैदा होते हैं और सदा ही बनते बिगड़ते रहते हैं। श्रीलंका में तमिलों की प्रतिक्रिया को आवाज देने वाला लिट्टे जैसा दुर्दांत संगठन भी आज इतिहास का विषय बन गया है क्यों कि प्रतिक्रिया की एक उम्र होती है। हमारे पड़ौसी देश अफगानिस्तान में रुसी हस्तक्षेप की प्रतिक्रिया में पनपे संगठन भी शनैः शनैः पराभाव को प्राप्त हो रहे हैं। हमारे देश में भी ऐसे अनेक प्रतिक्रिया वादी संगठनों के तीव्र विस्तार या फैलाव से हम प्रभावित होते हैं। प्रायः हम ऐसे में हीन भावना के भी शिकार हो जाते हैं कि अमुक संगठन का विस्तार अधिक हो रहा है, हम वैसा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में हमें विचार करना चाहिए कि हम जिस संगठन की चर्चा कर रहे हैं उसका उद्गम कहां से है? क्या उसके उद्गम का कारण किसी प्रकार की प्रतिक्रिया है? जैसे भारत में सैंकड़ों वर्षों तक केन्द्रीय सत्ता मुसलमानों की रही। इस दौरान कई बार बहुसंख्यक हिन्दुओं पर अत्याचार किए गए। उनको अन्याय पूर्वक दबाया गया और उसके परिणाम स्वरूप उनमें इस अन्याय के प्रतिरोध में जन्मी प्रतिक्रिया की प्रेरणा से भारत में हिन्दुओं के भी कई संगठन जन्में। क्योंकि उद्गम की प्रेरणा प्रतिक्रिया भी इसलिए इस प्रतिक्रिया ने इन्हें फैलाव में भी सहयोग किया और आज भी कर रही है। आज भी उस अन्याय को आधार बनाकर या धर्म के नाम पर असमानता का भय ही उन संगठनों की खुराक है। क्षत्रिय समाज में भी ऐसे अनेक संगठन बने और बनते बिगड़ते भी जा रहे हैं। लेकिन इनका जीवन उतना ही लंबा है जितनी वह प्रतिक्रिया जो उनके उद्गम की प्रेरणा है। ऐसी सापेक्षता से पनपा संगठन वास्तविक संगठन नहीं होता। विशुद्ध संगठन वह होता है जो किसी प्रतिक्रिया की सापेक्षता में नहीं पलता बल्कि स्वयं अपने सिद्धान्तों की सकारात्मकता में पलता है। जिसके जीवित रहने के लिए किसी प्रकार के भय की आवश्यकता होती है या किसी प्रकार की परिस्थिति की आवश्यकता होती है वह संगठन उस भय या परिस्थिति की आयु जितना ही लंबा होता है। संगठनकर्ता जब तक उस भय या परिस्थिति का हौवा बनाए रखता हैं, उसे पोषित कर पाता है तब तक वह संगठन आशातीत गति से प्रगति करता है। लेकिन श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा संगठन नहीं है। यह किसी परिस्थिति की प्रतिक्रिया में पनपा संगठन नहीं है बल्कि क्षत्रिय जाति को अपने दायित्व पर आरूढ़ करने को प्रवृत्त करने वाले संगठन है इसलिए इसका फैलाव एवं प्रसार उन संगठनों जैसे नहीं होता जैसा किसी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप पनपे संगठनों का होता है लेकिन जितना होगा उतना स्थायी एवं अकाट्य होता है।

मानबेन्द्रा शाह और शार्दुल विक्रम

टेहरी गढवाल (पूर्व में उ.प्र.और वर्तमान में उत्तराखण्ड) परमार रियासत थी। यहां के राजपूत बतौर उपनाम अपने नाम के बाद 'शाह' लगाते हैं। ब्रिटिश राज में सम्मान स्वरूप इस रियासत को 11 तोपों की सलामी का अधिकार दिया गया था। शासक के जीवन काल में ही पद त्याग की परम्परा इस घराने की पहचान रही है। इस राजघराने की पांचवी पीढी में ले. कर्नल हिज हाइनेश सर महाराजा नरेन्द्र शाह बहादुर के दो पुत्र, महाराज कुमार मानबेन्द्रा और महाराज कुमार शार्दुल विक्रम बहुत ही प्रतिभाशाली थे। अपने पिताश्री के पदत्याग के बाद मानबेन्द्रा शाह टेहरी गढ़वाल के छठे शासक बने। इनका जन्म 26 मई 1921 को प्रतापनगर जिले टेहरी गढवाल उ.प्र. में हुआ था। आपने गवर्नमेण्ट कॉलेज लाहोर (पाकिस्तान) और आई.सी.एस. कैम्प देहरादून से शिक्षा प्राप्त की। मानबेन्द्र शाह ने ले. कर्नल के सम्मानित पद पर रहते हुए अपनी सेवाएं दी। ले. कर्नल हिज हाइनेस मानबेन्द्रा शाह साहिब बहादुर 2, 3, 4, 10, 11, 12, 13 और 14वीं लोकसभा के सांसद रहे। आप पहले कांग्रेस और बाद में भारतीय जनता पार्टी के प्रभावी सदस्य थे। संसद सदस्य रहते हुए आप पहाड़ी क्षेत्र की स्वास्थ्य एवं पेयजल योजना समिति के अध्यक्ष और अन्य अनेक समितियों के प्रभारी सदस्य रहे। महाराजा मानबेन्द्र शाह सन् 1980 से 1983 तक ऑयरलैण्ड में भारत के राजदूत रहे थे। लम्बी बीमारी के बाद 5 जनवरी 2007 को नई दिल्ली में उनका देहान्त हो गया। 7 जनवरी 2007 को प्रतापनगर टेहरी गढवाल में पूरे राजकीय सम्मान के साथ उनकी अंत्येष्टि की गई। हिज एक्सीलेन्सी ले. कर्नल महाराज कुमार शार्दुल बिक्रम शाह महाराजा मानबेन्द्र के अनुज थे। इनके पिता ने पांच विवाह किए थे, ये उनकी दूसरी पत्नी के पुत्र थे। आपका जन्म 29 मई 1921 को हुआ था। बतौर युवा कप्तान आपने हॉडसन हार्स और 19 लान्सर्स, जो विभाजन के उपरांत पाकिस्तान आर्मी का हिस्सा बनी, के साथ रहते हुए दूसरे विश्वयुद्ध में जापानियों के विरुद्ध जंग में भाग लिया। युद्ध की समाप्ति पर आप रॉयल इण्डियन आर्मी के कमाण्डर इन चीफ जनरल सर बाउचर के डिफेन्स अटैची के पद पर रहे। सन् 1947 में आपको भारतीय विदेश सेवा के लिए चुन लिया गया। एम. के शार्दुल आयरलैण्ड, लॉओस, घाना, फिनलैण्ड, स्पेन एवं टर्की में भारत के राजदूत रहे। आपने नई दिल्ली में चीफ ऑफ प्रोटोकाल का पदभार भी संभाला। 2003 में आपका स्वर्गवास हो गया।

प्रतिभाएं

दुर्गा महिला विकास संस्थान सीकर में अध्ययनरत बालिकाओं में से निम्न बालिकाओं ने 12वीं में उत्कृष्ट परिणाम दिए है। नृसिंहपुरी निवासी सुरेन्द्रसिंह की पुत्री **चिंकी कंवर** ने कला वर्ग में 89.80 प्रतिशत, मगरासी निवासी करणसिंह की पुत्री **सपना कंवर** ने 89.80 प्रतिशत, सिवाणा निवासी **निर्मल कंवर** पुत्री भंवरसिंह ने 82 प्रतिशत, राजपुरा निवासी स्व. राजूसिंह की पुत्री **गोमती कंवर** ने 82 प्रतिशत एवं बलाड़ निवासी लालसिंह की पुत्री **किरण कंवर** ने 77.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। विज्ञान वर्ग में देवरी निवासी **अन्नू कंवर** पुत्री आनंदसिंह ने 86.60 प्रतिशत, आसरवा निवासी भगवानसिंह की पुत्री **निशा कंवर** ने 85.60 प्रतिशत, तंवरा निवासी सुरेन्द्रसिंह की पुत्री **गजराज कंवर** ने 77.40 एवं चिरपाली छोटी निवासी **सोनू कंवर** पुत्री महेन्द्रसिंह ने 75.60 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सरोज कंवर राठौड़ को पी.एच.डी. : लाडून्दा निवासी सरोज कंवर राठौड़ ने बीकानेर की 'शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रभाव' विषय पर शौध कर पी.एच.डी. की उपाधि हासिल की। सरोज कंवर का पीहर पुष्कर के निकट नांद है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	मिलन शिविर	07.06.2019 से 10.06.2019 तक	भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट द्वारा संचालित आलोक आश्रम, गेहूं रोड़, बाड़मेर। ● आमंत्रित स्वयंसेवक ही आ सकेंगे। ● आमंत्रित स्वयंसेवक पूरा शिविर न कर सकें तो कम-से-कम दो दिन के लिए आ सकते हैं।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

अर्जुनसिंह नवातला बने महामंत्री

संघ के स्वयंसेवक अर्जुनसिंह नवातला 25 मई को हुए चुनाव में राजस्थान पंचायती राज कर्मचारी संघ की बाड़मेर इकाई के जिला महामंत्री चुने गए हैं। वे इससे पूर्व चौहटन ब्लॉक के अध्यक्ष थे।

पृष्ठ एक का शेष....

स्वागत... आप केवल मिटाने की बात करें लेकिन उसके बाद कोई विकल्प नहीं प्रस्तुत करें तो यही हालात होती है। आशा है कि विपक्ष अपनी दयनीय हालात से उबर कर सरकार का सृजनात्मक विरोध जारी रखेगा क्योंकि मजबूत विपक्ष के अभाव में भावनाओं के बल पर निरंकुशता की सदैव संभावना बनी रहती है। लेकिन हमारे लिए तो यह चुनाव विगत चुनावों जैसे ही रहे। राजस्थान में हमारे सांसदों की संख्या पिछली बार जितनी ही रहने के लिए हम लहर को उत्तरदायी बता सकते है लेकिन हमारी भी भूमिका क्या सही रही यह हमारे लिए चिंतनीय है। क्या कांग्रेस से टिकट लेकर आए हमारे प्रतिनिधियों को हमने एक तरफा मतदान किया?

स्थानाभाव के कारण पृष्ठ संख्या 2 व 4 के कुछ स्थाई कॉलम इस बार नहीं दिए जा रहे हैं।

सम्राट अशोक

चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार शासक बना। बिन्दुसार ने पिता द्वारा निर्मित शासन व्यवस्था से मौर्य साम्राज्य का लगभग 25 वर्षों तक सफलतापूर्वक संचालन किया। बिन्दुसार की मृत्यु के बाद उसका योग्यतम पुत्र अशोक मौर्य साम्राज्य का शासक बना। अशोक का जन्म बिन्दुसार की प्रधान रानी सुभद्रांगी से हुआ। अशोक में विद्यमान एक कुशल शासक के गुण उसकी किशोरावस्था में ही परिलक्षित होने लगे। बिन्दुसार के समय जब राज कर्मचारियों की अकर्मण्यता व भ्रष्ट आचरण से तक्षशिला में विद्रोह उत्पन्न हो गया तब पहले बिन्दुसार के एक अन्य पुत्र सुसीम को भेजा गया लेकिन सुसीम उस विद्रोह पर नियंत्रण पाने में असफल रहा तब अशोक को तक्षशिला का उपराजा (प्रशासक) बना कर भेजा गया। अशोक ने विद्रोह के मूल में छिपे कारणों का पता लगा कर प्रशासन में आवश्यक सुधार किया, अकर्मण्य व भ्रष्ट अधिकारियों को पद से हटा कर योग्य अधिकारियों की नियुक्ति की जिससे प्रजा संतुष्ट हुई और विद्रोह खत्म हो गया। तक्षशिला की शासन व्यवस्था ठीक हो जाने के बाद अशोक को उज्जयिनी का उपराजा नियुक्त किया गया। बिन्दुसार की मृत्यु के बाद अशोक 273 ई.पू. में सम्राट बना लेकिन अशोक के लिए राह आसान नहीं थी। सत्ता की महत्त्वकांक्षा में सुसीम व अशोक के कुछ अन्य भाइयों ने षड्यंत्रों की एक शृंखला को जन्म दिया। राज्य में अव्यवस्था और अराजकता का वातावरण उत्पन्न हो गया। अशोक को अपने भाइयों से सत्ता संघर्ष में सफलता पाने व व्यवस्था को पुनः ठीक करने में लगभग चार वर्ष का समय लगा। 269 ई.पू. के पास अशोक सही रूप में मौर्य साम्राज्य का सम्राट बना। आन्तरिक व्यवस्था को ठीक करने के बाद अशोक ने अपने पितामह चन्द्रगुप्त द्वारा स्थापित साम्राज्य को विस्तारित करने की नीति अपनाई। सुदूर दक्षिण के क्षेत्र के अलावा केवल कलिंग का राज्य (वर्तमान उड़ीसा) ही मौर्य साम्राज्य से बाहर था जो कि अशोक जैसे महत्वाकांक्षी शासक के लिए असहनीय था। कलिंग एक शक्तिशाली राज्य था जिसका नेतृत्व कुछ इतिहासकारों के अनुसार राजा अनंत पद्मनाभन कर रहा था।

अशोक कलिंग को जीत कर अपनी सीमाओं को सुरक्षित बनाना चाहता था जिधर से बिन्दुसार के समय जब चोलों पर आक्रमण किया गया। तब कलिंग ने चोलों की सहायता कर मौर्य सेना के अभियान को असफल बना दिया था। अशोक अपने पिता की उस असफलता का प्रतिशोध भी चाहता था। कलिंग युद्ध का विवरण अशोक के तेरहवें अभिलेख से विस्तृत रूप में मिलता है। यह युद्ध 261 ई.पू. में लड़ा गया था, संभवत युद्ध स्थल धौली का पर्वतीय क्षेत्र था। कलिंग ने अशोक के इस आक्रमण का भयंकर प्रत्युतर दिया। यह युद्ध बड़ा भयंकर था जिसमें भीषण रक्तपात हुआ। अन्ततः युद्ध में अशोक की विजय हुई और कलिंग की स्वाधीनता समाप्त हुई, कलिंग का मौर्य साम्राज्य में विलय कर दिया गया और उसे मौर्य साम्राज्य का पांचवा प्रान्त बना दिया गया। इस युद्ध में भयंकर जनहानि हुई। युद्ध में एक लाख से अधिक लोग मारे गए, एक लाख पचास हजार लोगों को बंदी बना लिया गया। युद्ध के बाद फैली महामारी से भी बड़ी संख्या में नागरिक मारे गए। अब मौर्य साम्राज्य की सीमा (पूर्वी) बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत हो गई थी। सुदूर दक्षिण को छोड़कर अब सम्पूर्ण भारत वर्ष मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत था। **(क्रमशः)**

राजपूत विकास समिति ने सहयोग किया

श्री राजपूत विकास समिति शेरगढ़ व यूथ टीम बेलवा राणाजी ने बेलवाराणाजी गांव के पाबूराम भील को 25000 रुपए एवं 2 क्विंटल अनाज सहयोग स्वरूप दिया। उल्लेखनीय है कि पाबूराम के तीन बच्चों की विगत दिनों बांध में डूबने से मौत हो गई थी।

(पृष्ठ तीन से लगातार)

‘जागे हैं तो सोयें नहीं, सदैव कृतज्ञ बने रहें’

त्रिपुरा सुंदरी एवं बेणेश्वर धाम के दर्शन किए : शिविर में 20 मई को शिविरार्थियों ने शिविर स्थल के निकट स्थित बेणेश्वर धाम एवं त्रिपुरा सुंदरी मंदिर के दर्शन किए। बेणेश्वर धाम क्षेत्र के आदिवासियों का बड़ा तीर्थ है एवं माही जाखम व सोम नदी का संगम स्थल है। शिविरार्थी प्रातः खेलों के बाद बसों के द्वारा सामूहिक रूप से वहां पहुंचे और संगम में स्नान कर बेणेश्वर महादेव के दर्शन किए। अपराह्न प्रवचन पश्चात् सभी शिविरार्थी वागड़ क्षेत्र के प्रसिद्ध शक्तिपीठ त्रिपुरा सुंदरी के दर्शन करने पहुंचे। सायंकालीन आरती में सभी शिविरार्थी शामिल हुए एवं फिर मंदिर परिसर में ही सायंकालीन वंदना कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य तनसिंह जी द्वारा 28 मार्च 1969 को लिखी गई प्रार्थना ‘सुण त्रिपुर सुंदरी बाळा’ गाई गई।

आदिवासी नेताओं के साथ बैठक : शिविर में 26 मई को घाटोल विधायक हरेन्द्र निनामा, आसपुर विधायक गोपीचन्द मीणा, सेवानिवृत जिला शिक्षा अधिकारी फूलशंकर मीणा, सेवानिवृत प्रधानाचार्य रामचन्द्र बरोड़, शंकरलाल बमणिया, गणेश कटारा आदि प्रमुख आदिवासी नेता माननीय संघ प्रमुख श्री से मिलने पहुंचे। उनके साथ चर्चा करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम सब ईश्वर की संतान हैं। संतान में बड़े-छोटे का कोई भेद नहीं होता, पिता के लिए सब समान होते हैं। जातियां एक व्यवस्था है जो किसी न किसी रूप में हर काल में सर्वत्र रही हैं। इसमें छोटे-बड़े का भेद एक विकृति है और विकृतियां दूर की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि संविधान सभा में 300 लोग थे और सभी की सहमति से इसे पारित किया गया इसलिए इसकी प्रस्तावना में ‘हम भारत के लोग’ वाक्यांश का उपयोग किया गया ऐसे में यह संपूर्ण भारत का है। लेकिन विकृत मानसिकता वाले लोग अपनी पूर्व धारणाओं के कारण इसकी मूल भावना के विपरीत काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि समाज में सबकी अपनी अपनी भूमिका एवं महत्व है और उसी पर चलकर हम परमेश्वर की ओर बढ़ रहे हैं। बैठक के बाद सभी ने साथ में भोजन किया। माननीय संघ प्रमुख श्री ने सभी को यथार्थ गीता भेंट की।

शिविर में स्नेहमिलन : 25 मई को शिविर में सहयोग करने वाले स्थानीय समाज बंधुओं का स्नेहमिलन रखा गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी ने उपस्थित समाज बंधुओं से चर्चा करते हुए संघ का सामान्य परिचय दिया। सामाजिक भाव को दृढ़ करने की आवश्यकता पर बल दिया एवं वर्तमान समय में राजनीति में जातीय आधार की महत्वपूर्ण भूमिका की चर्चा करते हुए अपने ही समाज के व्यक्ति के पक्ष में मतदान न करने के दुष्प्रभावों पर चर्चा की। स्नेहमिलन में पधारे सभी समाजबंधु एवं महिलाएं सायंकालीन प्रार्थना में सम्मिलित हुए। प्रार्थना के उपरान्त सभी को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हम सब यहां नीरव स्थान पर भक्ति, ज्ञान और कर्म तथा व्यष्टि, समष्टि एवं परमेष्टि की त्रिवेणी में साधना रत हैं। आप सब लोगों के यहां आने से आप में कोई स्फूरणा हो, प्रेरणा मिले एवं आप परमेश्वर प्रदत्त उद्देश्य की पूर्ति में हमारी सहायता करें ऐसी संघ की आपसे अपेक्षा है। हम सब आपके आभारी हैं कि आप हमें संभालने को आए हैं। भगवान ने हमें संसार को पार करने के लिए संसार में भेजा है ऐसे में हम संसार से प्राप्त वस्तु को संसार की सेवा में लगाएं एवं परमेश्वर से प्राप्त आत्मा को उसकी सेवा में लगाएं, संघ इसी अभ्यास को साधने में संलग्न है। संघ हमारी चेतना को ऊपर की ओर उठाने का प्रयत्नरत है। परमेश्वर हम पर कृपा करें कि हमारी यात्रा जारी रहे, रुके नहीं क्योंकि रुकने पर सड़ांध आती है और जीवन बर्बाद हो जाता है। प्रार्थना के बाद सभी सहयोगियों ने भोजन किया। समाज बंधुओं ने माननीय संघ प्रमुख से अनौपचारिक चर्चा की। महिलाओं ने देर तक माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में संघ, परिवार एवं समाज विषयक चर्चा की।

‘मेरी साधना’ व सहगायनों पर चर्चा : श्रद्धेय आयुवानसिंह जी की पुस्तक ‘मेरी साधना’ में व्यक्ति के मन में कुछ करने की चाह को बलवती बनाने में बाधक तत्वों से संघर्ष का वर्णन है। समाज के लिए कुछ करने की व्यक्तिगत चाह को सामाजिक आकांक्षा तक ले जाने का सीढ़ी दर सीढ़ी वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। मा.प्र. शिविरों एवं उ.प्र. शिविरों में प्रायः एक कालांश इस पुस्तक के अवतरणों पर चर्चा के लिए होता है। इस शिविर में भी इस पर चर्चा की गई। पूज्य तनसिंह जी ने साधन जीवन में आने वाले उतार-चढाव एवं संकल्प शक्ति को दृढ़ कर समर्पण तक ले जाने के विभिन्न सोपानों की अभिव्यक्ति करने वाले लगभग 180 गीतों की रचना की है। शिविरों में एक कालांश में उनमें से किसी एक पर चर्चा कर उनके भावों एवं संदेश को समझने का प्रयास किया जाता है। इस शिविर में भी एक कालांश इसके लिए रखा गया।

ब्रह्मचर्य पर विशेष कालांश : शिविर में एक कालांश ब्रह्मचर्य आश्रम के आचार-विचार, आहार-विहार पर शिक्षा के लिए माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा लिया गया। शिविर के सभी अविवाहित स्वयंसेवकों को माननीय संघ प्रमुख श्री ने ब्रह्मचर्य के महत्व, शास्त्रीय आधार एवं जीवनरस के संग्रह को लेकर बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में विस्तार से बताया। 19 मई से 24 मई तक प्रतिदिन चले इस कालांश में माननीय संघ प्रमुख श्री ने स्वयंसेवकों को बताया कि ब्रह्मचर्य आश्रम ऊर्जा के संग्रह का समय है। गृहस्थाश्रम की तैयारी का समय है। विवाहोपरांत श्रेष्ठ संतोनोत्पति के लिए उचित आचारण की भी जानकारी दी गई।

खेलों के माध्यम से आत्मनिरीक्षण : जो जाना है, समझा है वह जीवन में कितना आया है इसके लिए अपने आप पर प्रयोग करने के लिए शिविर में खेल सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम होता है। शिविर में प्रातःकालीन खेलों में मुख्य रूप से संघर्ष प्रधान, अपराह्न विश्राम पश्चात बुद्धि प्रधान एवं शाम को हल्के खेलों के माध्यम से आत्मनिरीक्षण का अवसर उपलब्ध करवाया गया एवं पथक शिक्षकों की निगरानी में अभ्यास करवाया गया।

‘साधना पथ’ पर चर्चा : पूज्य तनसिंह जी ने संघ की प्रणाली को सम्पूर्ण योग मार्ग बताया एवं तदनुकूल व्यवहारिक प्रणाली प्रस्तुत की। उन्होंने अपने इस संपूर्ण योग मार्ग के विभिन्न सोपानों को सौ छोटे-छोटे अवतरणों में बांटकर एक पुस्तक का रूप दिया। उस पुस्तक ‘साधना पथ’ को माननीय संघ प्रमुख श्री द्वारा कुछ चुने हुए स्वयंसेवकों को अपराह्न बौद्धिक के समय समझाया गया। पूरे शिविर में इस कालांश में इस पुस्तक पर चर्चा की गई एवं प्रश्नों का समाधान किया गया।

बौद्धिकों में समझाया संघ दर्शन : अपराह्न भोजन के पश्चात् 2 घंटे तक संघ के दर्शन को समझाने के लिए विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिए गए। इन बौद्धिक प्रवचनों में लोक संग्रह, अधिकारी साधक, इतिहास, संस्कृति, नेतृत्व, उत्तरदायित्व, अनुशासन आदि विषयों को विस्तार से समझाया गया।

वागड़ के स्वयंसेवकों ने की श्रद्धापूर्वक व्यवस्था : शिविर की व्यवस्था का पूर्ण दायित्व वागड़ क्षेत्र के स्वयंसेवकों ने संभाला। सहयोगी राशि एकत्र करने से लेकर भोजन आदि सभी व्यवस्थाओं में क्षेत्र के स्वयंसेवक बंधु अनवरत श्रद्धापूर्वक संलग्न रहे। शिविर स्थल संघ के स्वयंसेवक दिग्विजयसिंह लांबापारड़ा का विद्यालय भवन था। उनका पूरा परिवार सहयोग में तत्पर रहा। प्रांत प्रमुख हणवंतसिंह सज्जनसिंह का गड़ा अपनी पूरी टीम सहित प्रातःकालीन जागरण के पूर्व से रात्रि शयन के बाद तक व्यवस्था में लगे रहे।

भैरोसिंह शेखावत को श्रद्धांजलि

पूर्व उप राष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देने के लिए जयपुर स्थित उनके स्मृति स्थल पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। इसमें माननीय संघ प्रमुख श्री भी अपने साथियों सहित शामिल हुए।

जोधपुर में कैरियर कार्यशाला व सम्मान समारोह

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए युवाओं को तैयार करने वाले समाज के अधिकारियों की जोधपुर टीम द्वारा 26 मई को मारवाड़ राजपूत सभा प्रांगण में कैरियर कार्यशाला व नव चयनित आई.ए.एस. दिलीप प्रताप सिंह का सम्मान समारोह आयोजित हुआ। कार्यशाला में लगभग 500 राजपूत विद्यार्थी शामिल हुए। विद्यार्थियों की स्क्रूटनी करने के लिए उनसे एक फार्म भरवाया गया। इस समारोह में दिलीपसिंह लुणियावास, दीपेन्द्रसिंह हिम्मतपुरा, के.एम. सिंह इसरणादा व मानवेन्द्रसिंह बोरावट का उच्च पदों पर चयन होने पर सम्मान किया गया। कैरियर कार्यशाला को दिलीपसिंह, दीपेन्द्रसिंह, के.एम. सिंह, अर्जुनसिंह, राजेन्द्रसिंह सिसोदिया, महावीरसिंह जोधा, पुष्पा कंवर सिसोदिया, मंगलेश कंवर चूंडावत आदि वक्ताओं ने संबोधित किया एवं विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की प्रक्रिया की जानकारी दी। सुमेरपुर में भी स्थानीय समाज बंधुओं द्वारा नवचयनित आई.ए.एस. दिलीपसिंह का सम्मान किया गया।

श्रीराजपूत सभा द्वारा पंचम सामूहिक विवाह सम्मेलन

श्री राजपूत सभा जयपुर द्वारा 18 मई को अपने जगतपुरा (जयपुर) स्थित भवन में पांचवा सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित किया गया। संत समताराम, सांसद रामचरण बोहरा, जयपुर मेयर विष्णु लाटा, भीलवाड़ा जिला प्रमुख शक्तिसिंह हाड़ा के आतिथ्य में आयोजित इस सम्मेलन में 51 जोड़ों का विवाह सम्पन्न हुआ। राजपूत सभा के अध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा ने बताया कि इस सम्मेलन में समाज के आर्थिक दृष्टि से अक्षम, बी.पी.एल., विधवा, विकलांग अभिभावकों का निःशुल्क विवाह संपन्न करवाया गया। समाज के सहयोग से सभी दंपतियों को आभूषण एवं आवश्यक घरेलू सामान स्त्रीधन के रूप में दिया गया। समारोह में दंपत्तियों के परिजन, बाराती एवं समाजबंधु शामिल हुए।

धांधिया में राव बल्लूजी की जयंती

जोधपुर जिले की लूणी तहसील के धांधिया गांव में 25 मई को राव बल्लूजी चापांवत की 428वीं जयंती मनाई गई। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व महाराजा गजसिंह ने राव बल्लूजी को स्वामी भक्त एवं वीर योद्धा बताया। उन्होंने पूर्वजों के कार्यों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का आह्वान किया। राजस्थान धरोहर प्रोन्नति प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष ओंकारसिंह लखावत ने समारोह के अध्यक्ष के रूप में राव बल्लूजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। समारोह को विशिष्ट अतिथि लेफ्टिनेंट जनरल दिलीपसिंह हरसोलाव, जेएनवीयू के कुलपति प्रो. गुलाबसिंह चौहान, झीतड़ा महंत वासुदेवाचार्य आदि ने भी संबोधित किया। संघ के बेंगलूर मंडल में रविवार 26 मई को राजपूत समाज भवन राणासिंगपेट में भी राव बल्लूजी की जयंती मनाई गई जिसमें स्थानीय संघ बंधुओं ने भाग लिया।

निवर्तमान सांसद हरिओमसिंह नहीं रहे

राजसमंद के निवर्तमान सांसद **हरिओमसिंह पंवार** का 27 मई को देहावसान हो गया। कैंसर से पीड़ित हरिओमसिंह 2014 में राजसमंद से सांसद चुने गए थे। पथ प्रेरक दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकग्रस्त परिवार को संबल हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

श्रीमती संपत कंवर का देहावसान

बाड़मेर के पूर्व रावल स्व. उम्मेदसिंह की पत्नी माजीसा **श्रीमती संपत कंवर शेखावत** का 27 मई को देहावसान हो गया। पथ प्रेरक दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकग्रस्त परिवार को संबल हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

कानसिंह बोघेरा को मातृशोक

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा की माताजी **मदन कंवर** जी का 26 मई को देहावसान हो गया। विगत दिनों ही कानसिंह जी ने माताजी के 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर कार्यक्रम रखा था। पथ प्रेरक दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकग्रस्त परिवार को संबल हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

मानसिंह काणेटी का देहावसान

संघ के स्वयंसेवक शक्तिसिंह भरतसिंह काणेटी के दादाजी **मानसिंह चंदुभा** काणेटी का 99 वर्ष की उम्र में 14 मई को देहावसान हो गया। पथ प्रेरक दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकग्रस्त परिवार को संबल हेतु परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयं सेवक

श्री गजेन्द्रसिंह शेखावत (महरोली)

को भारत सरकार में जल शक्ति मंत्री (केबीनेट) बनने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

राजूसिंह बांटा
शिव मॉल सूरत
मो. 9898497973

नारायणसिंह आइन्ता
देवी टेक्स, सूरत
मो. 9601781259

लूणसिंह भाडली
स्वरूप एजेन्सी, सूरत
मो. 9374065007

ओमसिंह मिठौड़ा
गंगा प्लास्टिक पादरू
मो. 9461086537

भगवतसिंह करड़ा
मितल डायमंड, सूरत
मो. 8141019998

संग्रामसिंह मूठली
सिवाना (बाड़मेर)
मो. 9602642826

मोकमसिंह फुलिया
भटियाणी एजेन्सी, सूरत
मो. 9377512635

भोमसिंह देडा
जोधपुर, हाल सूरत
मो. 8107101034

बुधसिंह राठौड़ केतु
शेरगढ (जोधपुर)
मो. 9328127701

अजीतसिंह कुकनवाली
नागौर हाल सूरत
मो. 7383817100

नरेन्द्रसिंह जावीया
जालोर, हाल सूरत
मो. 9537774329

लीलुसिंह सुल्ताना
जैसलमेर, हाल सूरत
मो. 9662790733

दिलीपसिंह गड़ा
भटियाणी एजेन्सी, सूरत
मो. 9375852588

प्रेमसिंह रेवाड़ा
पी. राठौड़ एण्ड कम्पनी, सूरत
मो. 9726546735

भोजराजसिंह, रतन महाराज
का तला, भटियाणी एजेन्सी, सूरत
मो. 9328032014

विक्रमसिंह मिरगानैणी
नागौर, हाल सूरत
मो. 9374826935

सुरेन्द्रसिंह कुलाची
राजसमंद, हाल सूरत
मो. 9586026850

विक्रमसिंह आकोली
विक्रम फैशन, सूरत
मो. 7600549384

महावीरसिंह देणोक
सत्यम एजेन्सी, सूरत
मो. 9879119170

बाबूसिंह रेवाड़ा
बाड़मेर, हाल सूरत
मो. 9974423310

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (**दूरभाष: 2466353**) से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org